इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, संपादक की अनुमति के बिना उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

शीर्षक	:	**हिन्दी साहित्य में स्त्री : सिद्धान्त और समीक्षा**
संपादक का नाम	:	डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह
प्रकाशक	:	समदर्शी प्रकाशन
प्रकाशन का पता	:	एल-2-1198, शास्त्री नगर, मेरठ, उत्तर प्रदेश- 250004 मोबाइल नम्बर: 9599323508
संस्करण	:	प्रथम (अक्टूबर, 2022)
मुद्रक	:	समदर्शी प्रकाशन, मेरठ
आईएसबीएन नम्बर	:	978-93-94078-60-4
सर्वाधिकार	:	डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह

HINDI SAHITY MEN STRI : SIDHANT AUR SAMIKSHA
EDETED BY DR NOORJAHAN RAHAMTULLA
₹280/-

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

भूमिका	7
मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य की स्त्रियाँ	10
'जुर्माना' उपन्यास में निहित स्त्री संघर्ष	15
आदिवासी लेखिकाओं का साहित्य एवं स्त्री-चिंतन	21
'विजन' उपन्यास में चित्रित उच्च शिक्षित स्त्री की मानसिक स्थिति व संघर्ष	28
प्रेमचंद जी के 'कफ़न' कहानी में नारी विमर्श	34
'संगत' काव्य संग्रह में स्त्री भावना की अभिव्यक्ति	37
स्त्री की आज़ादी: महापाप	42
हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श	51
समकालीन हिंदी कविता में स्त्री स्वर	56
भक्ति साहित्य में नारी का स्वरूप और आधुनिक समाज में नारी :एक अध्ययन	64
मन्नू भण्डारी जी की 'यही सच है' कहानी की नायिका 'दीपा' के चरित्र पर एक आलोचना।	70
नारी के बदलते स्वरूप	75
यशपाल के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के विविध आयाम	83
मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में नारी मनोवैज्ञानिकता : 'विरुद्ध' के विशेष संदर्भ में	91
स्त्री भाषा की दृष्टि से 'अल्मा कबूतरी' का मूल्यांकन	97
सुशीला टॉकभौरे की कविताओं में स्त्री अस्मिता की खोज : एक विश्लेषण	103

Scanned with OKEN Scanner

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य की स्त्रियाँ

-डॉ. गौरी त्रिपाठी

समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श की प्रमुख लेखिका है मैत्रेयी पुष्पा। अगर हम ग्रामीण परिवेश आधारित लिखने वाली किसी एक लेखिका का नाम लेना चाहें तो निसंदेह मैत्रेयी पुष्पा होंगी, जिनकी रचनाओं में स्त्री विमर्श के सभी रूप दिखाई पड़ते हैं और अगर उनके उपन्यासों की बात करें तो उनके हर उपन्यास में स्त्री की पीड़ा संघर्ष और आगे बढ़ने का ज़ज्बा दिखाई पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि वे बहुत ही स्वाभाविकता के साथ स्त्री जीवन की पीड़ा को व्यक्त करती हैं। स्त्री मन को व्यक्त करना अपने आप में एक चुनौती है। हमारा हिंदी कथा साहित्य जो प्रेमचंद युग में गाँव की तरफ उन्मुक्त दिखाई पड़ता था वह क्रमशः रेणु, ज्ञानरंजन आदि कई रचनाकारों के बाद समाप्त सा हो गया। स्त्री लेखन में ..ज्यादातर हम शहरी मध्य वर्ग या उच्च वर्ग की स्त्रियों पर आधारित लिखना पढ़ना देखते और सुनते हैं ..ज्यादातर उनकी कहानियों में प्रेम न कर पाने का मलाल या बहुत ही संकुचित फलक पर कहानियाँ लिखी जाती हैं। स्त्री का दर्द संघर्ष अगर देखना हो तो हमें गाँव में जाना होगा वहाँ उसके संघर्ष की तीव्रता और विविधता को समझा जा सकता है। निचाट गाँव की गँवार स्त्रियाँ जो आर्थिक रूप से भी कहीं ना कहीं शहरी स्त्रियों से ..ज्यादा आत्मनिर्भर होती हैं, मैत्रेयी पुष्पा उनकी कहानी कहती हैं। उनको हमारे सामने लेकर आती हैं, हम जान पाते हैं कि एक औरत अपने घर में, समाज में, गाँव में कितने-कितने स्तरों पर संघर्ष करती है, लेकिन टूटती नहीं है। पीछे नहीं हटती हैं। बल्कि जूझने का माद्दा रखती है। मैत्रेयी पुष्पा ऐसी पात्रों को गढ़ती हैं। स्त्री अपने जीवन में कितनी भूमिकाओं में खड़ी रहती हैं, वह कहीं कोमल है, तो कहीं कठोर भी हो जाती है। इनके उपन्यासों में सभी चरित्र कस्तूरी कुंडल बसे की कस्तूरी, अल्मा कबूतरी की अल्मा, कदमबाई, भूरी बाई, इदन्नमम की मंदा इन सभी उपन्यास के पात्रों से हम स्त्री की पीड़ा को समझ सकते हैं । हर स्त्री संघर्ष करती है और अपने अस्तित्व की खोज में लगी हुई रहती है।

मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे चुप नहीं रहती